267

इंद्रजाल कॉमिक्स

संख्या २६७

बहादुर

लाल हवेली का रहस्य

टाइम्स ऑफ इंडिया प्रकाशन

रु. १/-

A Gift for any occasion

AA SWEETS

Kovak

Wonderland of Sweets Available in attractive packing

BYP/9AA/STUDIO SANDEEP

delicious varieties to choose

- Madhur Assortment • Marshmellows
- Jujubes • Kaju Pedhe
- Marzipan Fruits • Persian Delight
- Greetings

Available at reasonable prices

AA SWEETS

A Leading Name in Indian Sweets

ANANT AND ATHAVALE PRODUCTS

Senapati Bapat Marg, Dadar, Bombay-400 028

बहादुर

लाल हवेली का रहस्य

कथा • आबिद सुरती
चित्र • गोविंद ब्रह्मणिया

कहावत मशहूर है कि चम्बल की घाटी में शेर पलते हैं।

कुछ थोड़े-से लोग चम्बल के बीहड़ के फुसलावे में आ कर गैरक़ानूनी कारवाईयाँ करने लगते हैं। किंतु अधिकांश लोग ईमानदारी से जीवन बिताते हैं।

शैतान सिंह ने सोलह साल की आयु में ही बीहड़ में डेरा जमा लिया और जल्दी ही बहुत ख़तरनाक डाकू के रूप में उसका आतंक छा गया।

सात वर्ष में उसने ३२ आदमियों की हत्या की, मुआवज़े के लिए २० बच्चों को उड़ाया, और पुलिस के कई अफ़सरों को अपाहिज कर दिया। फिर एक दिन—

—वह घाटी के सबसे धनवान गाँव, **जयगढ़** पर डाका डालने चला!

गाँव आ गया, लाल सिंह! हमला सूरज ढलने के बाद ही करेंगे!

लाल सिंह और उसके साथी तैयार थे।

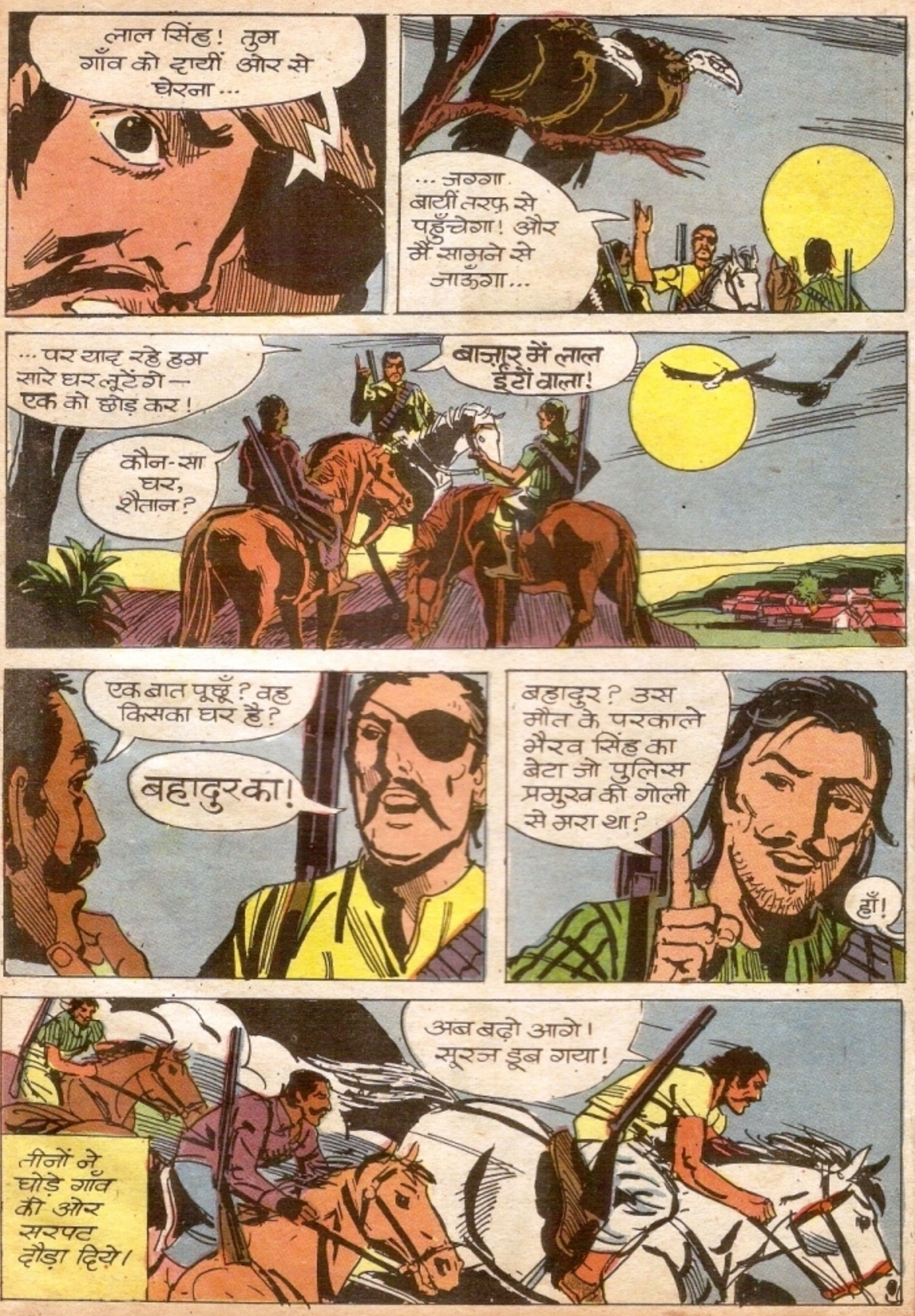
लाल सिंह! तुम गाँव को दायीं ओर से घेरना...
...जग्गा बायीं तरफ़ से पहुँचेगा! और मैं सामने से जाऊँगा...
...पर याद रहे हम सारे घर लूटेंगे — एक को छोड़ कर!
बाज़ार में लाल ईंटों वाला!
कौन-सा घर, शैतान?
एक बात पूछूँ? वह किसका घर है?
बहादुर का!
बहादुर? उस मौत के परकाले भैरव सिंह का बेटा जो पुलिस प्रमुख की गोली से मरा था?
हाँ!
अब बढ़ो आगे। सूरज डूब गया!
तीनों ने घोड़े गाँव की ओर सरपट दौड़ा दिये।

बहादुर उस समय साइकिल के डंडे से बंदूक़ बना रहा था।

माँ!

सुनो खुशी की बात!

क्या?

मेरी बंदूक़ दो-एक दिन में बन जायेगी!

फिर?

मैं बापू का बदला लूँगा!

उस चूहे को भून के रख दूंगा!

तू यही चाहती है न, माँ?

हाँ! बहादुर..

... कई बरसों से मैं यही आस लगाये हूँ! तू नहीं जानता आज कितनी खुश हूँ मैं— ओः!

अचानक किसी चरवाहे लड़के की पुकार गूंज उठी—

भागो! जान बचाओ! दरवाज़े बंद कर लो!! शैतान आ रहा है!!!

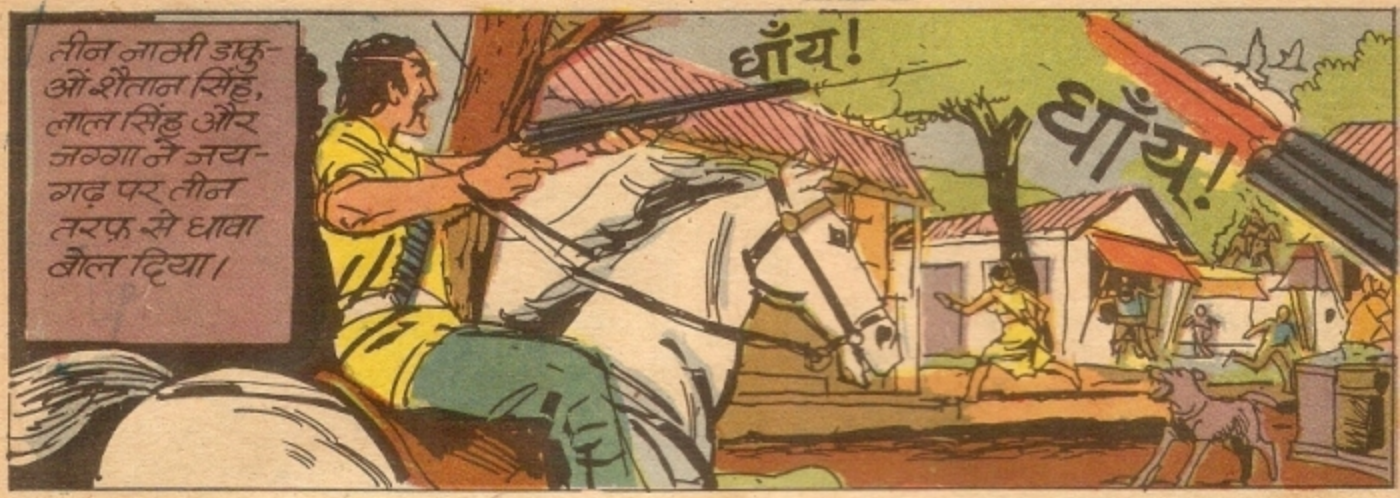
तीन नामी डाकुओं शैतान सिंह, लाल सिंह और जग्गा ने जयगढ़ पर तीन तरफ़ से धावा बोल दिया।
धाँय!
धाँय!

चिड़ियाँ पंख फड़फड़ा कर चीं चीं करने लगीं।

लूट-मार का बाज़ार गर्म हो गया।
बस इतना ही! बंदूक़ की नाली इसके मुँह में डालकर उड़ा दो भेजा!

नहीं! नहीं, शैतान! यही है मेरी पूँजी!

आह!
धाँय!

ज़ालिम छोड़ दे मेरी बेटी को – आह!
धाँय!

लाल सिंह ग़लत क़दम उठाने ही वाला था कि –
ठहरो ज़रा!

कहाँ जा रहा है, लाल सिंह ?
लाल ईंटों के घर !

भूल गया जो मैंने कहा था ?

बस देखना चाहता हूँ !
बिल्कुल नहीं !

लाल ईंटों के घर में —
घबरा मत, माँ ! हमारी तरफ़ कोई आँख नहीं उठायेगा !

सारे गाँव में आग लगी है !

हमारे घर में नहीं ! बापू का नाम भूले नहीं हैं !

तभी किसीने दरवाज़ा खटखटाया !
कौन है ?
खट

शैतान सिंह ! दरवाज़ा खोलो !

ले! आ गया वह!
शैतान सिंह! क्या काम है?
बात करनी है!
बहादुर ने दरवाज़ा खोला।
पधारो, शैतान सिंह क्या सेवा करूँ तुम्हारी?
अब तुम बड़े हो गये हो! बताओ, आगे के लिए क्या सोचा है?
यह बात! मेरी बंदूक़ तैयार ही समझो!
एक सप्ताह में पुलिस के कुत्ते, विशाल को निशाना बनाऊँगा!
उसके बाद?

तुम्हारे साथ आ जाऊँ तो ?

यही मैंने सोचा था! निशाना चूके नहीं!

फिर शैतान सिंह अपने साथियों, लाल सिंह और जग्गा के साथ लाशों को रौंदता हुआ बीहड़ में लौट गया।

इधर –
शैतान ने मुझे भिखारी बना दिया!

मेरे घर को राख कर दिया!
हाय, मेरी औरत! मर गयी!

मेरे बेटे को मार डाला! वही तो मेरे बुढ़ापे की लकड़ी था!

लोगों की पुकार से गाँव के मुखिया का हृदय रो उठा।
अब शोक करने से क्या होता है, मुखिया?

डाकू आये थे तब कहाँ थे तुम ?
मेरा प्यारा भतीजा जाता रहा, कमरू खाँ !
बड़े दुख की बात है !
म — मेरी सुनो तो एक बात कहूँ —
कहो - कहो !
हमारे यहाँ डाका पड़ता है तो डाकू बहादुर के घर को नहीं छूते । क्यों ?
कौन जाने — वह उनसे मिला हुआ हो !
तो यह रपट क्यों नहीं लिखाते पुलिस में ?
मुझे गला नहीं कटवाना शैतान से !
यह डर है तो एक बात और सुनो !

पुलिस के दफ़्तर में—

हुज़ूर, कोई मोची मिलने आया है।

पुलिस थाना

इनाम ₹ 25,000

मुझसे?

पुलिस प्रमुख विशाल से मिलना है। आप ही हैं!

हूँ तो! भेजो अंदर! सबको नहीं— दो-एक आदमियों को!

कहिये!

हमारे गाँव में फिर डाका पड़ा।

जानता हूँ!

फिर भी आप ऐसे बैठे हैं, जैसे कुछ हुआ ही नहीं!?

आप ही बताइये, मुखिया जी— क्या करूँ?

पुलिस थाना

इनाम शमशेर सिंह को जिंदा या मुर्दा पकड़ने पर!

हमसे पूछते हैं आप?

शर्म कीजिये!

... आप क़ानून के अंग हैं। हमारी रक्षा करना आपका कर्त्तव्य है!

मुखिया, इन निकम्मों से कहना-सुनना बेकार है!

बीहड़ों में जाकर डाकुओं से लोहा लें, इतना दम इनमें नहीं!
त-तुम!

प्रमुख, इस साल चौथा डाका था यह! —
— और तुमने हमारे बचाव के लिए क्या किया? कुछ नहीं!

हमारे आदमी तुम्हें कायर समझते हैं — कायर ही हो तुम!

अच्छा! तो मुझसे भी सुनो...

कितने डाकू आये थे तुम्हारे गाँव में?
तीन।

और गाँव की आबादी कितनी है?
कोई ३००० — क्यों?

यानी ३००० कायर?
क्या?

तुम ३००० में इतना दम नहीं कि तीन पागलों का सामना करो?
यह सुनकर सब के सब सन्न रह गये।

हमारी भी कठिनाइयाँ हैं!
ज़रा सोचो — तुम्हारा जयगढ़ हमारे यहाँ से मीलों दूर है।

और हमारी सरकार की स्थिति ऐसी नहीं कि हर गाँव में सशस्त्र पुलिस चौकी क़ायम करे।

यही एक कारण है कि हम बदमाशों को अक्सर पकड़ नहीं पाते!

डाके की ख़बर हमारे पास आते-आते डाकू वापस बीहड़ों में जा छिपते हैं, — छोड़ जाते हैं सारे घरों में बरबादी।

पर एक में नहीं! —

ईनाम २५,०००

शमशेर सिंह को ज़िन्दा या मुर्दा पकड़ने वाले को

क्या मतलब?

बहादुर के घर की तरफ़ आँख नहीं उठाते!

क्यों — हमसे मत पूछो!

समझता हूँ तुम्हारी बात!

और वह तो अपने बाप का बदला लेने पर तुला हुआ है। आप होशियार रहें!

इस चेतावनी के लिए धन्यवाद! आगे तुम्हारे गाँव की रक्षा के लिए मैं बंदोबस्त करूंगा। नमस्कार!

गाँव-वाले चुपचाप लौट गये।

वह लड़का बीहड़ के फेर में न पड़े, इसके लिए कुछ करना होगा।

अगले सप्ताह —
वो मारा! देख माँ! बंदूक़ तैयार है!
सच!?
अहा! कैसा ठंडा है फ़ौलाद!
पर घोड़ा दबाते ही गर्मागर्म गोलियाँ बरसाने लगता है, निशाने पर!
निशाना कौन है, यह तुझे मालूम ही है!
सोलह आने!
फिर देर काहे की है?
तेरे आशीर्वाद की!
तेरा आशीर्वाद मुझे चाहिये, माँ!
तो यही सोचा है तुमने!
मैं आशीर्वाद देती हूँ — जा! अंधेरा पड़े जाना ठीक रहेगा!

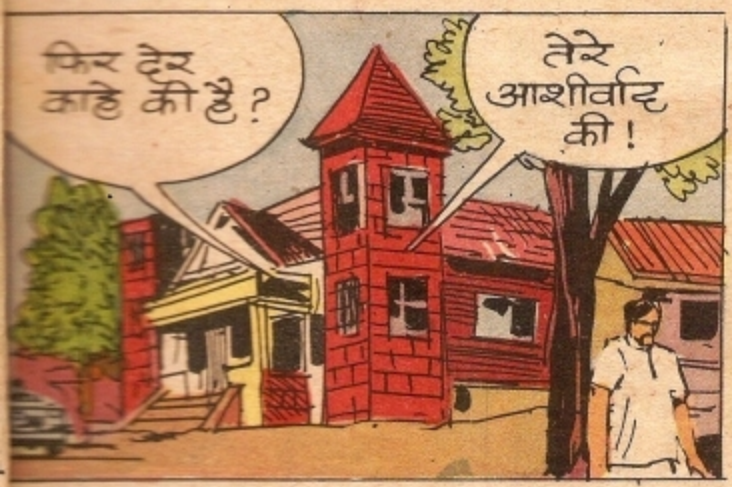

तुम!
मैं विशाल हूँ — और निहत्था हूँ!
गोली मार दो, बहादुर!
नहीं, माँ! शेर मेहमानों पर वार नहीं करते!
पर इसने तेरे बापू को मारने में ज़रा आगा-पीछा नहीं किया था! चुका हिसाब!
वह पुराना हिसाब बाद में चुका लूँगा।
इस वक़्त तुम मेरे घर आये हो। बोलो, क्या सेवा करूँ?
मेरे साथ चलो!
कहाँ?
पूछो कुछ मत!

माँ को रोता हुआ छोड़ कर बहादुर विशाल के साथ हो लिया।

अच्छा है तुम आ गये!

फिर वे जीप में बैठ कर चले।

उम्मीद है मेरे साथ धोखा नहीं करोगे!

मुझ पर भरोसा किया है न!

बहादुर!

क्या?

तुम क्या जानते हो अपने बापू के बारे में?

मेरे बापू, भैरव सिंह— चम्बल की घाटी में दहाड़ने वाले सिंह थे।

वे धनवानों को लूट कर गरीबों को पालते थे!

अच्छा!

पर इरादा कहाँ ले जाने का है मुझे?

जीप तेज़ी से चली जा रही थी।

घबराओ मत! और क्या जानते हो?

बापू सब औरतों को अपनी माँ की तरह मानते थे।

सारी घाटी जानती है कि न जाने कितनी निर्धन लड़कियों का ब्याह उन्होंने करवाया था।

सचमुच बहुत अच्छे थे तुम्हारे बापू!

तभी जीप झटके से रुकी।

लेकिन एक बात बताओ, बहादुर! बापू जब मरे, तुम पाँच वर्ष के थे!

उनकी ये बड़ी-बड़ी बातें तुम्हें किसने बतायीं?

माँ ने! और किसने!?

तो अब कुछ मुझसे भी सुनो!

उधर वे खंडहर दिखते हैं?
देखने को है ही क्या!
कभी वहाँ बंगला था जिसमें चार प्राणियों का परिवार रहता था।
हँसी करते हो? बंगला और परिवार भी कहीं ग़ायब हो सकते हैं!
तुम्हारे महान् बापू ने आग लगा कर परिवार को ज़िंदा जला दिया!
असम्भव!
वह पागल औरत है न?
कौन है?
तुम्हारे बापू के ज़ुल्म का शिकार!
नहीं! नहीं!
और यह क़ब्रिस्तान देखो!
तुम्हारा मतलब...
बहादुर का मानो दम घुटने लगा।

हाँ, मेरा मतलब है कि इस गाँव की सारी आबादी को तुम्हारे बापू ने मिटा डाला।

इन्हीं कारणों से मुझे उन्हें ख़त्म करना पड़ा।
ठीक ही किया आपने! सच!

फिर भी तुम बदला लेना चाहते हो—
मुझे क्षमा कर दो!

मुझे पता नहीं था कि मेरे बापू के कर्म ऐसे थे!

मैं क्षमा कर दूँगा पर लोग नहीं करेंगे!
वे फिर जीप में चल दिये।

आप ठीक कहते हैं! अपने बापू के पाप मुझे धोने होंगे!

यह बात हुई! एक बात कहूँ मैं?

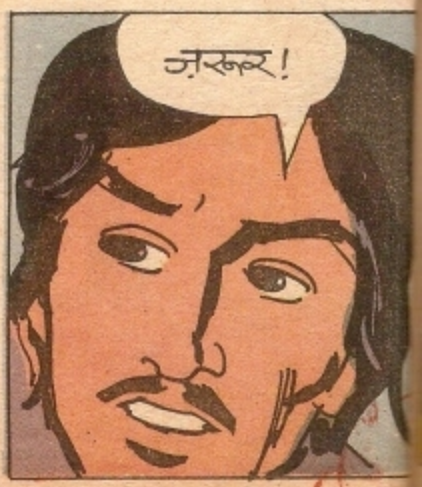
ज़रूर!

विशाल ने कहा –

अपने गाँव के बचाव के लिए दल बनाओ। लोगों को ज़रूरत है।

कैसे बनाऊँ?

अपनी उम्र के कुछ लड़के जमा करो। उन्हें तालीम मैं दिलवाऊँगा।

अगले दिन जयगढ़ में –

दोस्तो, अपने गाँव के बचाव के लिए एक नागरिक सुरक्षा दल बनाऊँगा। कौन मेरा साथ देगा?

पर कोई आगे नहीं आया।

कम-से-कम दस लड़के चाहियें। और विशाल साहब हमारे साथ हैं!

फुः!

किसी ने उसका भरोसा नहीं किया। सब चल दिये।

अरे यार, इसमें भी कोई चाल है!

क्या कौड़ी फेंकी है इसने! इधर डाकुओं से मिली भगत – उधर पुलिस से साठ-गाँठ। हमें नहीं पड़ना झमेले में!

एक बार – सुनो तो – सच, कहता हूँ –

पर किसी ने नहीं सुनी।

हताश वह घर लौटा तो वहाँ भी...

उस लफंगे ने तेरी मति फेर दी। बहादुर, तू नहीं लेगा बापू का बदला तो कौन लेगा?

किंतु बहादुर पर कोई असर नहीं हुआ।

बेटा हो कर ऐसी बातें करता है, बाप के लिए!

नहीं, माँ! वह बरबादी देख कर बापू की इज़्ज़त जाती रही मेरे मन से!

तेरा बापू इस धरती का सपूत था, ग़रीबों का सहारा था!

इस भुलावे में मत रह, माँ! मैं जान गया हूँ उसकी करतूतें—

क्या कहा—!

चटाक

माँ!

निकल जा! अपना काला मुँह कभी मत दिखाना मुझे!

बहादुर चुपचाप घर से निकल गया— लाल ईंटों के घर से!

एक महीना भी नहीं बीता था कि फिर डाका पड़ा!

भागो! जान बचाओ! दरवाज़े बंद कर लो! शमशेर आया है!

शमशेर भी चम्बल का नामी डाकू था। उसे पकड़ने के लिए २५,००० रु. का इनाम था।
आगे बढ़ो!
चम्बल के सबसे धनी गाँव ने हमें न्योता है!
न्योता आनंद करने— खुशी मनाने का!
बच्चा भी रास्ते में आये तो बेहिचक ख़त्म कर देना!
घर जला डालना!
हर रोड़ा गोली से हटाना!
पुलिस को पता चल जाये कि शमशेर आया था यहाँ।
पर याद रहे...

... लाल ईंटों के घर की तरफ़ आँख भी न उठाना!
उसमें कौन रहता है?
बहादुर!
पर मैंने सुना है कि महीना भर हुआ, उसने वह घर छोड़ दिया! अब मंदिर के पास किसी झोंपड़ी में रहता है!
तो पुरानी बातों की ख़ातिर उस झोंपड़ी को छोड़ देना!
शमशेर के गिरोह ने पूरे जोश से नयगढ़ में लूट-मार शुरू कर दी।
धाँय!
आह!
हे भगवान्!
बहादुर भल्ला उठा पर अकेला था।
आः!
ओः!
धाँय!

तभी कोई पहचानी हुई आवाज़ उसके कानों में पड़ी—

बहादुर!

—आवाज़ उसकी भयभीत माँ की थी।

वह अपने घर की ओर भागा। हवा में गोलियाँ सनसना रही थीं।

माँ! मैं आया!

धाँय!

धाँय!

धाँय!

लाल ईंटों के घर में उसने देखा कि माँ लहू में लथपथ पड़ी थी!

ओ माँ!

वह अंतिम साँसें गिन रही थी।

बहादुर— मेरे बेटे...

... मौत की पीड़ा ने— मुझे तोड़ दिया है... मैं...

क्या, माँ?

... आज सच बोलूँगी! तेरा... बापू— ऐसा ही पत्थर था— जैसा शमशेर...

माँ! माँ!!

तूने ठीक किया! विशाल ने ठीक किया! आज मैं— यह जान गयी! जा, गाँव वालों की मदद कर! — हे राम!

माँ!

बहादुर का खून खौल उठा। माँ की लाश के सामने उसने प्रतिज्ञा की!

मैं प्रतिज्ञा करता हूँ, माँ, कि जीवन भर दुष्टों से लड़ूँगा, निर्दोषों की रक्षा करूँगा!

डाकू दोनों हाथों से लूट-मार कर रहे थे।

गला काट के फेंक दो कुँए में।

नहीं-नहीं! मेरे बेटे को माफ़ कर दो— यह तो—

तभी एक गोली सनसनाती हुई डाकू के सीने में घुस गयी।

आह!

धाँय!

बहादुर की हाथ की बनी बंदूक़ काम आयी। चुन-चुन कर निशाना लगा रहा था वह।

धाँय!

आग!

उसकी देशी बंदूक़ की हर गोली से एक-एक डाकू धूल चाटने लगता था।

क्षण भर को शमशेर भौंचक्का रह गया। आज पहली बार किसी ने उसका सामना किया था।

देखो कौन है! जो भी हो, उसकी धज्जियाँ उड़ा दो!

बहादुर लाल ईंटों के घर में सुरक्षित था। बंदूक़ गोलियाँ उगल रही थी।

धाँय!

सरदार, लाल ईंटों के घर से—

आह!

धाँय!

तभी एक गोली उसके लगी और उसकी बात अधूरी रह गयी।

शमशेर सकपका गया। उसके छह आदमी यमलोक पहुँच चुके थे।

घेर लो वह घर! और ज़िंदा पकड़ो !!

गोलियों से छलनी करने से पहले देखूँगा उस कमीने को!

उसके आदमियों ने फ़ौरन ही घर की घेराबंदी कर ली!

बहादुर छिपने की जगह से निकल कर छत पर गया। उतनी देर बंदूक़ चुप हो गयी।

इनके आने से पहले निकल जाना है!

बहादुर के सौभाग्य से अगले घर की छत की दूरी बहुत नहीं थी।

राम रखवाला है!

डाकू तब तक दरवाज़ा तोड़ कर घर में घुस गये!

होशियार रहना! बड़ा चालाक है यह सूअर!

उन्होंने सावधानी से पर आनन-फ़ानन घर को छान मारा।

कहाँ छिप गया वह कमीना?

तभी—

शमशेर!

बंदूक़ के ठंडे फ़ौलाद से शमशेर सिहर उठा।

बंदूक फेंक दो!
बहादुर! तू!!
क्या हो गया तुझे! हम पुराने दिनों की ख़ातिर तेरा मान करते हैं!
हाँ- हाँ! तभी तो मेरी माँ ने अपने लहू में नहा कर अभी दम तोड़ा है!
क्या!?
गाँव के लोग सहमे- सहमे से अपने घरों से देख रहे थे।
अरे! हमारा बहादुर सुरक्षा दल की बात सच कहता था।
एक और घर से -
बापू, देखो! हमारे बहादुर ने धाक जमा दी!
शमशेर! समय मत नष्ट करो। अपने आदमियों को वापस बुलाओ!
तभी एक डाकू कुछ कहने को लाल ईंटों के घर के छज्जे पर आया परंतु -
बापरे!

शमशेर बेबस था।

निकल आओ तुम सब!

डाकुओं ने देखा कि सरदार फँस चुका है तो उनकी सिट्टी-पिट्टी गुम हो गयी।

बंदूकें फेंक दो, मूर्खो! नहीं तो मुझे मरा देखोगे!

डाकू सन्नाटे में थे! हवा में तनाव छाया हुआ था। तभी गाँव-वाले जो घरों से ताक रहे थे, बहादुर की मदद करने निकल आये।

मारो!

मारो!

मार डालो कुत्तों को!!

नहीं! — ख़ून-ख़राबा जितना हुआ वही बहुत है!

मारो!

मारो!

इन्हें बाँध कर पुलिस के हवाले करेंगे!

जैसा कहो, बहादुर!

पुलिस के दफ़्तर में—

शाबाश, बेटे! यह लो २५,००० का इनाम!

कैसा इनाम?

शमशेर को पकड़वाने का इनाम रखा था सरकार ने। तुम उसे पकड़ लाये। बधाई देता हूँ तुम्हें।

बहुत धन्यवाद आपको! यह रक़म मैं गाँव के बचाव के लिए नागरिक सुरक्षा दल बनाने में लगाऊँगा!

इंद्रजाल कॉमिक्स कैमल

रंग प्रतियोगिता

निःशुल्क प्रवेश

इंद्रजाल कॉमिक्स

इनाम जीतिए

कैमल—पहला इनाम ३० रु.
कैमल—दूसरा इनाम २० रु.
कैमल—तीसरा इनाम १० रु.
कैमल—आश्वासन इनाम २
कैमल—सर्टीफिकेट १०
इंद्रजाल कॉमिक्स आश्वासन इनाम ५

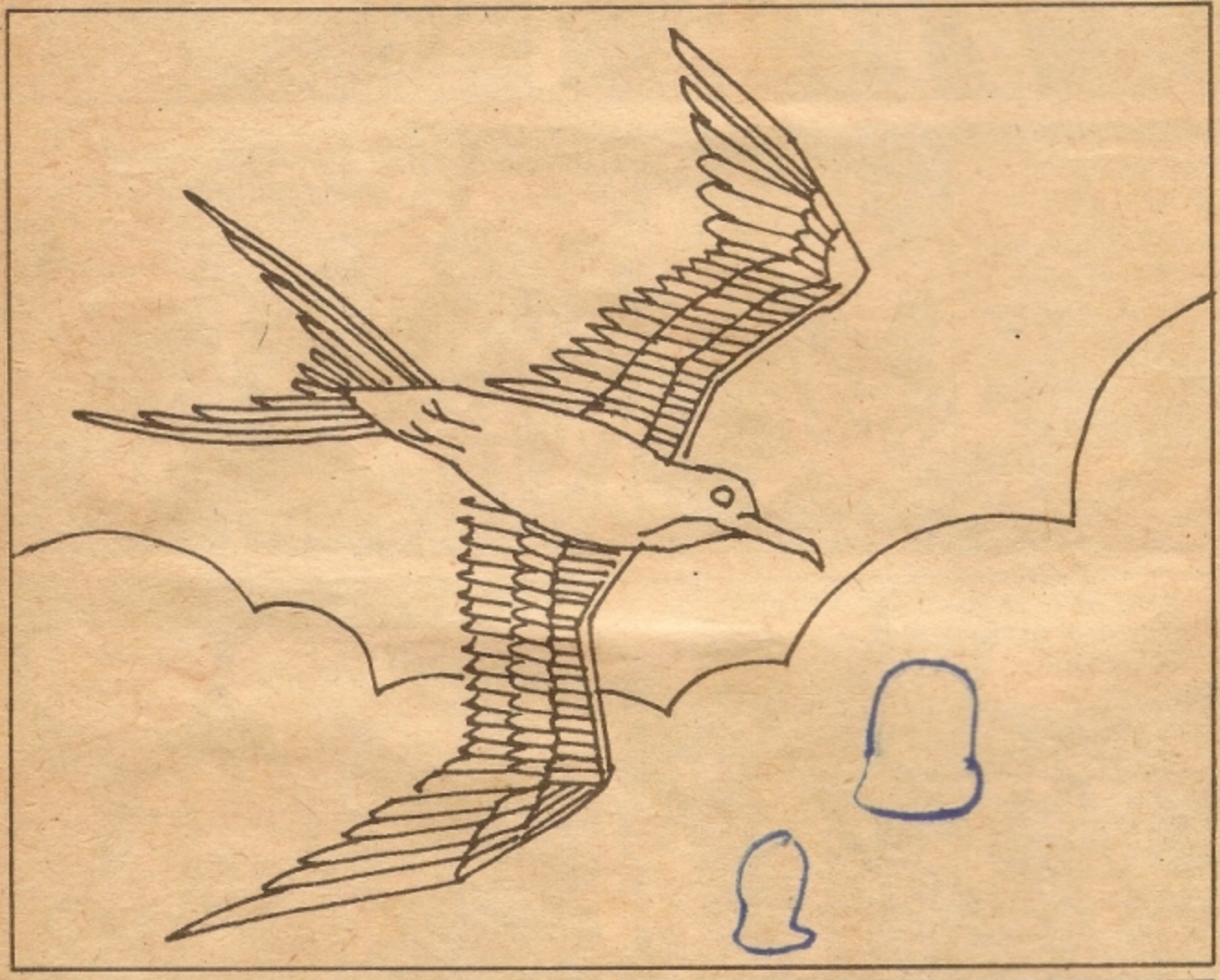

'बिंदुपूर्ण रेखाके साथ काटिये.

केवल १२ वर्ष तक के विद्यार्थी प्रतियोगिता में शामिल हो सकते हैं। ऊपर दिये गये चित्र में अपने मनचाहे कैमल रंग भर दीजिए। अपने रंगीन प्रवेश पत्र इस पते पर भेजिए → 'इंद्रजाल कॉमिक्स', टाइम्स ऑफ इंडिया बिल्डिंग, डॉ. डी. एन. रोड, बम्बई - ४०० ००१। परिणाम का निर्णय अन्तिम निर्णय होगा। और कोई भी पत्र व्यवहार नहीं किया जाएगा।

नाम _____ उम्र _____

पता _____

_____

कृपया ध्यान रखिए कि पूरा चित्र पेंट किया जाये।
चित्र भेजने की अंतिम तारीख: जनवरी १, १९७७

Vision

CONTEST NO.4

लूटो जेम्स का मज़ा!

जीतने के लिए ५०० मज़ेदार पुरस्कार!

इसके अलावा भी अन्य शानदार पुरस्कार जीतने का सुअवसर!

क्या बता सकते हो कि इनमें कौन सा चित्र असमान है?

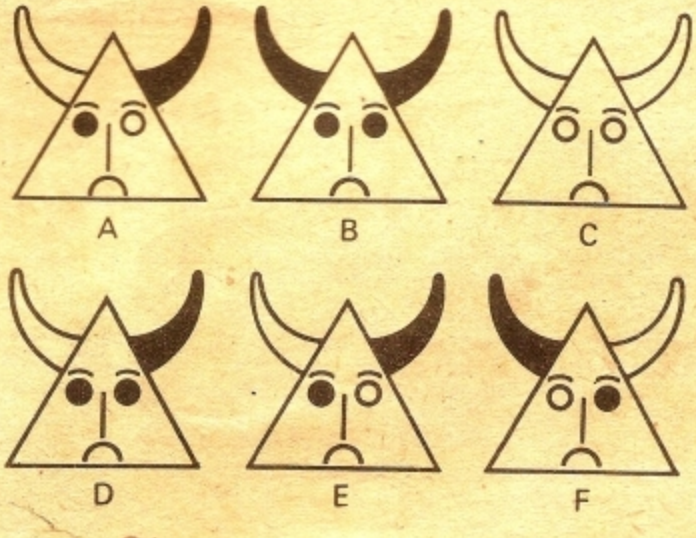

जल्दी करो! अपना उत्तर, कॅड्बरिज जेम्स के एक खाली प्लास्टिक पैकेट के साथ भेजो। पहले ५०० सफल प्रतियोगियों को ११ रुपये मूल्य का स्टेट बैंक गिफ्ट चेक मिलेगा। अतः तुम्हे अपने गिफ़्ट चेक पर ४०० रुपये का एक और शानदार इनाम जीतने का मौका मिलेगा— भाग्यशाली लोगों के लिए अतिरिक्त लाभ!

अपना उत्तर, नाम और पते के साथ केवल अंग्रेजी में और बड़े (ब्लॉक) अक्षरों में लिखो। प्रवेश-पत्र इस पते पर भेजो:
"लूटो जेम्स का मजा" डिपार्टमेंट एफ़-५
पोस्ट बॉक्स नं. ५६, थाने ४००६०१
प्रवेश-पत्र पहुंचने की अंतिम तिथि:
१५ जनवरी १९७७

चॉकलेट से भरे रंगीन कॅड्बरिज़ जेम्स

CHAITRA-C-39 HN

बेनेट, कोलमैन एण्ड कं. लिमिटेड के लिये श्रीकृष्ण गोविंद जोशी द्वारा टाइम्स ऑफ इण्डिया प्रेस, बम्बई में मुद्रित और प्रकाशित। संपादक: महावीर अधिकारी। जनरल मैनेजर: डा. राम तरनेजा।

Registered with the Registrar of Newspapers
in India under No: R. N. 11480/64

मुफ़्त
मनोरंजक
अमर चित्र कथा कॉमिक्स—
पॉपिन्स या गॉबलिन्स
के २० रैपर्स
के बदले में

रसीली प्यारी मज़ेदार

पारले पॉपिन्स

फलों के स्वादवाली गोलियां

ये रहे वो कॉमिक्स: १. शकुंतला २. राणा प्रताप ३. शिव पार्वती ४. भीष्म ५. बन्दा बहादुर ६. पद्मिनी ७. जातक कथाएं ८. वाल्मिकी ९. ताराबाई १०. रणजीत सिंह

अंग्रेजी – हिन्दी – मराठी – गुजराती में उपलब्ध

रैपर के साथ अपना नाम व पता साफ-साफ लिखकर और कॉमिक का नंबर व भाषा लिखकर, इस पते पर भेजिये:

पारले प्रॉडक्ट्स प्राइवेट लिमिटेड, निरलॉन हाउस, २५४-बी, डॉ. एनी बेसन्ट रोड, बम्बई ४०० ०२५

everest/538/PP-hn